# शैक्षिक प्रबन्ध में संकट →

प्रबन्धन में संकट का तात्पर्य है दो पक्षों के बीच विचारों व दृष्टि कोणों में भिन्नता और असामंजस्य की स्थिति का उत्पन्न होना। अर्थात जब किन्ही दो परस्पर विरोधी विचार धाराओं के उत्पन्न होने के परिणाम स्वरूप सामंजस्य स्थापित नही होता है तब संकट की स्थिति उत्पन्न होती है। इसी स्थिति को प्रबन्धन में संकट कहा जाता है। शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर कई संकटों का सामना करना पड़ता है, कई की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन सभी समस्याओं का समाधान करना प्रबन्धन का कार्य है अर्थात प्रबन्धन, संकट के समय निर्णय लेने एवं मानवीय क्रियाओं पर नियन्त्रण करने की एक प्रविधि है। जिसके अन्तर्गत पूर्व निश्चित उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति की जाती है।

Page No.
Date

मोर्टन डयूच →

" संकट एक अतुलनीय प्रयास है। अथवा ऐसा प्रतीत होता है। कि एक अनोखे लक्ष्य की तरफ अग्रसर हो रहे हैं। इससे जो उपलब्धि होगी वह दूसरों के आधार पर की जायेगी। संकट की स्थिति मे विजय अथवा पराजय कोई भी स्थिति हो सकती है किन्तु प्रयास यही किया जाता है। कि पराजय न हो और विजय ही मिले।" इस प्रकार की स्थिति मे समूहों मे परस्पर द्वंद्व उत्पन्न होता है। एवं वैचारिक विभिन्नता उत्पन्न होती है। जिसके परिणाम स्वरूप प्रतियोगिता हो जाती है। तथा यह प्रतियोगिता संघर्ष को उत्पन्न करती है जिस कारण प्रबन्धन में संकट उत्पन्न होता है।

07/09/20

## प्रबन्धन मे संकट के कारण →

मे संकट के कारणो प्रबन्धन मे स्पष्ट रूप से कहे पाना अत्यन्त कठिन होता है। क्योकि प्रबन्धन मे संकट के कारण एवं परिस्थितियो मे सदैव परिवर्तन होता रहता है। जिसके परिणाम स्वरूप कारणो के सम्बन्ध मे सामान्यीकरण करना कठिन होता है। फिर भी कुछ महत्वपूर्ण कारणो का उल्लेख निम्न है।

1- विभिन्न दलो या समूहो मे रचनात्मक कार्यो का अभाव।

2- संस्थानो मे क्रियाशील विभिन्न दलो एवं समूहो के उद्देश्यो एवं आवश्यकताओ मे विभिन्नता।

3- संस्थानो के नियम विरुद्ध निर्णय लेना।

4- संस्थान मे क्रियाशील विभिन्न समूहो एवं दलो की दलबन्दी।

B- 73वें 74वें संशोधन और NPE 1986 की रोशनी में शैक्षिक प्रशासन में समुदाय के उभरते नियम को समझना

C- पंचवर्षीय योजनाओं के संदर्भ स्वतन्त्र भारत की समझ विकसित करना।

## भारत की पँचवर्षीय योजनाएँ →

हर 5 वर्ष के लिए केन्द्र सरकार द्वारा देश के लोगों के लिए आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए शुरु की जाती है। पंचवर्षीय योजनाएँ केन्द्रियकृत और एकीकृत राष्ट्रीय आर्थिक कार्यक्रम है। 1947 से 2017 तक भारतीय अर्थव्यवस्था का नियोजन की अवधारणा का यह आधार था। इस योजना आयोग-1951-2014 और नीति आयोग (2015-17) द्वारा विकसित निष्पादित और कार्यान्वित की गयी पँचवर्षीय विकसित योजनाओं के माध्यम से किया गया था। पदेन अध्यक्ष के साथ रूप में प्रधान मंत्री के साथ आयोग के पास एक पदेन उपाध्यक्ष भी होता था जिसका ओहदा एक कैबिनेट मंत्री के बराबर होता था। मान्टेक सिंह अहलूवालिया आयोग के अंतिम उपाध्यक्ष थे। 26 मई 2014 को इस्तीफा दे दिया 12वीं योजना का कार्य काल 2017 में पूरा हो गया।

चौथी योजना से पहले राज्य संसाधनो का आवंटन का निर्धारण करने के लिए तब से सूत्र के संशोधित संस्करणो का उपयोग किया गया राज्य की योजनाओं के लिए तब से सूत्र के संशोधित संस्करणो का उपयोग किया गया है।

# पंच वर्षीय योजना का इतिहास →

पंच वर्षीय योजनाएं केन्द्रिय कृत और एकीकृत राष्ट्रीय आर्थिक कार्यक्रम है। जोसेफ स्टालिन ने 1928 में सोवियत संघ में पहली पंचवर्षीय योजना को लागू किया अधिकांश कम्युनिस्ट राज्यो और कई पूंजी वादी देशो ने बाद मे उन्हें अपनाया चीन व भारत दोनो ही पंचवर्षीय योजना को जारी रखते है जबकि चीन ने 2006 से 2010 तक अपने ग्यारवें (11वें) का नाम बदल दिया यह केन्द्र सरकार के विकास के लिए अधिक व्यवहारिक दृष्टिकोण को इंगित करने के लिए एक योजना (जिहुआ) के बजाय एक दिशानिर्देश (गिहुआ) था भारत ने प्रथम प्रधान मंत्री नेहरू प्रभाव से 1951 मे अपना पहला पंचवर्षीय योजना शुरू किया प्रथम पंचवर्षीय योजना काफी महत्वपूर्ण थी क्योकि स्वतंत्रता के बाद भारती विकास मे इसकी बडी भूमिका थी। इस प्रकार इसने कृषि उत्पादन मे इसका पुरजोर समर्थन किया और इसने देश के औद्योगीकी करण का भी शुभारम्भ किया (लेकिन दूसरी योजना से कम जिसने भारी उद्योगो पर ध्यान केन्द्रित किया) इसने सार्वजनिक क्षेत्र के लिए एक महान भूमिका (एक उभरते कल्याण राज्य के साथ-साथ एक बढते पूंजी क्षेत्र के लिए एक विशेष प्रणाली का निर्माण किया

## प्रथम पंच वर्षीय योजना -(1951-56)

भारत के प्रथम प्रधान मंत्री नेहरू को 8 दिसम्बर 1951 को भारत की पहली पाँच वर्ष की योजना प्रस्तुत की योजना मुख्य रूप से बांधो और सिंचाई मे निवेस सहित कृषि प्रधान क्षेत्र में भारत के विभाजन और तत्कालीन स्थिति को ध्यान देने की जरूरत के सबसे मुश्किल माना गया था यह योजना हैराल्ड डोमर मॉडल पर स्थित थी। 2068 अरब (1950 विनियम दर में 23.6 अरब अमेरिकी डॉलर की कुल योजना बनाई बजट सात व्यापक क्षेत्रो को आवंटित किया गया था। सिंचाई और ऊर्जा (27.2%) कृषि और सामुदायिक विकास 17.4%) परिवहन और संचार 24% उद्योग 8.4%, सामाजिक सेवाओ के लिए 16.64% भाखड़ा नंगल बांध और हीरा कुण्ड बांध सहित कई योजना शुरू की गयी।
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (I.I.T) को प्रमुख संस्थान के रूप मे शुरु किया गया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को धन का ख्याल रखा और सम्बन्धित क्षेत्र के लिए देश मे उच्च शिक्षा शिक्षा को मजबूती से स्थापित किया गया। पांच इस्पात संयन्त्र जो दूसरी पंच वर्षीय योजना के संयंत्र बीच में आये शुरु संविदा पर हस्ताक्षर किये गये यह योजना हैराल्ड डोमर मॉडल पर आधारित थी।

## दूसरी पंच वर्षीय योजना →

दूसरी पंच वर्षीय योजना - (1956-1961) मे शुरु की गयी मुख्य रुप से भारी उद्योग पहले की योजना है। जो मुख्य रुप से कृषि पर ध्यान केन्द्रित के विपरीत औद्योगिक उत्पादो के विपरित घरेलू उत्पादन में प्रोत्साहन दिया गया था सार्वजनिक क्षेत्र के विकास मे विशेष रुप से योजना महालनोबिस मॉडल एक आर्थिक विकास 1953 में भारतीय सांख्यिकी विद् प्रशान्त चन्द्र महलनोबिस द्वारा विकसित मॉडल का पालन किया गया योजना के उत्पादक क्षेत्रो के बीच निवेश के इष्टतम आवंटन निर्धारित क्रम में करने के लिए लम्बे समय से चलाने के आर्थिक विकास को अधिकतम करने का प्रयास किया गया। 1957 मे एक प्रतिभा खोज और छात्रवृत्ति कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया जिसका उद्देश्य प्रतिभाशाली छात्रों की खोज करनी थी एवं कार्य क्षेत्र परमाणु ऊर्जा से जुडे थे भारत मे दूसरी पंचवर्षीय योजना के तहत आवंटित कुल राशि 4800 करोड रुपये थी। यह राशि विभिन्न क्षेत्रो के बीच आवंटित की गयी जिसमें